जनजातीय महिलाएं कई कठिनाइयों से गुजर रही: सुधीर

विकास भारती में जनजातीय महिलाओं की स्थिति एवं चुनौतियां पर व्याख्यान का आयोजन

रांची। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची क्षेत्रीय शाखा रांची विवि एवं जनजातीय अध्ययन केंद्र विकाश भारती के सहयोग से 20 जून को अपराह्न चार बजे डा. सुधीर कुमार सिंह राजनीति विज्ञान दिल्ली विवि द्वारा भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थिति एवं चुनौतियां पर एक व्याख्यान का आयोजन टैगोर हॉल विकास भारती में किया गया। व्याख्यान की अध्यक्षता पद्मश्री अशोक भगत, अध्यक्ष विकास भारती ने किया। इस अवसर पर डा.बच्चन कुमार क्षेत्रीय निदेशक इग्नू क्षेत्रीय शाखा रांची ने गणमान्य व्यक्तियों को रूबरू करवाया। उन्होंने व्याख्यान की चर्चा और समाज के लिए कितना महत्वपूर्ण है उसके बारे में जानकारी दी। डा.सुधीर कुमार सिंह ने व्याख्यान के माध्यम से भारत में जनजातीय महिलाओं की सामा. जिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक स्थिति का एक अवलोकन कर लोगों को दिशा-निर्देश भी दिया। डा.सिंह ने बताया कि यह

एक महत्वपूर्ण विषय है जिसपर चर्चा की आवश्यकता है। भारतीय समाज में महिलाओं को कई प्रकार के भेदभाव का सामना करना पड़ता है। समाज में मान्यता और पहचान भी कठिनाई का माध्यम है। इसलिए यह अच्छी तरह से समझा जा सकता है कि जनजातीय महिलाएं भारत में कई कठिनाईयों से गुजर रही है। हालांकि सरकार ने महिलाओं के विकास के लिए विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों की रचना की है एवं सामाजिक स्तर में भी उन्हें अस्वीकृति मिली है। उनके अलगाव के पीछे प्राथमिक कारण बेहद कम साक्षरता दर है। निरक्षरता पिछड़ापन इनके प्रमुख जड़ भी है। लेकिन समाज के अन्य वर्गों के विपरीत जनजातीय समाज पुरूषों और महिलाओं के बराबर स्थिति स्थिति देता है। जनजातीय महिलाओं के पास काम, आय, परिवार की देखभाल करने और महत्वपूर्ण निर्णय लेने में समान योगदान है। जनजातीय महिलाओं के लिए भारतीय समाज में उचित स्थिति हासिल करना अभी भी मुश्किल है। डा.सिंह ने 12 वीं पंचवर्षीय योजन का भी जिक्र करते हुए कई बातें बतायी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पद्मश्री अशोक भगत ने कहा कि इस तरह के व्याख्यान का आयोजन होते रहना चाहिए और क्षेत्रीय निदेशक को इस तरह के व्याख्यान रखने के लिए बहुत धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संच. लन सुमेधा सेनगुप्ता ने किया एवं कार्यक्रम के अंत में विकास भारती रांची के डा.संदीप मुंडा ने व्याख्यान में उपस्थित लोगों को धन्यवाद ज्ञापन किया। इस व्याख्यान में प्रोफेसरों, विद्वानों, शोधकर्त्ताओं औरर अत्यधिक मात्रा में छात्राओं ने भाग लिया एवं लाभान्वित हुए। डा.बच्चन कुमार क्षेत्रीय निदेशक आईजीएनसीए ने डा.सुधीर कुमार सिंह को ज्ञानवर्धक व्याखन के लिए बहुत धन्यवाद दिया। व्याख्यान महत्वपूर्ण था और दर्शकों और मेहमानों के बीच एक बड़ा प्रभाव पड़ा। स्पेक्ट्रेट्र्स ने सक्रिय रूप से प्रश्न और उत्तर सत्र में भाग लिया।

AAJ NEWSPAPER RANCHI -21-06-2018

भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थितिः भविष्य की चुनौतियां विषय पर व्याख्यान, डॉ सुधीर ने कहा

जनजातीय महिलाओं के लिए भारतीय समाज में उचित स्थान हासिल करना अब भी कठिन

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स (आइजीएनसीए), रीजनल सेंटर रांची द्वारा आरोग्य भवन के टैगोर हॉल में बुधवार को 'भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थिति : भविष्य की चुनौतियां' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया. इसमें मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग के प्राध्यापक, डॉ सुधीर कुमार सिंह ने कहा कि समाज के अन्य वर्गों के विपरीत जनजातीय समाज पुरुषों व महिलाओं को बराबरी का दर्जा देता है.

जनजातीय महिलाएं कार्य, आय, परिवार की देखभाल और महत्वपूर्ण निर्णय लेने में बराबर का योगदान देती हैं, पर उनके लिए भारतीय समाज में उचित स्थिति हासिल करना अभी भी कठिन है.

मध्य भारत के जनजातीय समाज की भागीदारी दिखे

डॉ सिंह ने कहा कि विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए जनजातीय समाज को शिक्षा से जोड़ना जरूरी है. दिल्ली विवि के जनजातीय प्राध्यापकों में 70 प्रतिशत मीणा (राजस्थान) अथवा नॉर्थ ईस्ट के हैं. इनमें मध्य भारत के आदिवासियों की संख्या नगण्य है. केंद्रीय सेवाओं में इनकी भागीदारी दिखनी चाहिए. गरीबी उन्मूलन के लिए पंचायतों को तवज्जो देना जरूरी है. ट्रैफिकिंग पर रोक के लिए सख्त कानून बने. औषधीय पौधों पर काम होना चाहिए. वनों पर जनजातीयों का दखल बना रहे. जनजातीय भाषाओं के विकास पर भी बल दिया जाये, क्योंकि यदि ये लुप्त होंगी, तो संस्कृति भी लुप्त हो जायेगी.

कार्यक्रम में पद्मश्री अशोक भगत व अन्य.

आज भी एक रुपये में 50 पैसों की हो रही है लूट

डॉ सिंह ने कहा कि पांचवीं अनुसूची के क्षेत्र में यदि राज्य सरकार गलतियां करती है, तो राज्यपाल को उन्हें दुरुस्त करने का अधिकार है. नशा उन्मूलन के लिए भी सरकार व संस्थाओं को प्रयास करना चाहिए. जनजातीय इलाकों में विकास की धारा अपेक्षाकृत कम पहुंची है. उनके विकास के लिए एक रुपये में से आज भी 50 पैसों की लूट हो रही है. उद्योगों के लिए खनिज के दोहन की एक लक्ष्मण रेखा होनी चाहिए. प्रशासनिक व्यवस्था की कमी से नक्सलवाद जैसी समस्याएं पनपती हैं. महात्मा गांधी ने भी कहा था कि प्रकृति से उतना ही लो, जितना अपेक्षित है.

ताकत का केंद्र हैं जनजातीय महिलाएं : भगत

पद्मश्री अशोक भगत ने कहा कि जनजातीय महिलाएं ताकत का केंद्र हैं. समाज को चलाने में उनकी महती भूमिका रही है. युद्ध, संघर्ष व जहां भी जरूरत पड़ी, उन्होंने बहादुरी का परिचय दिया है. आर्थिक क्षेत्र में भी स्वयं सहायता समूहों से जुड़ कर वे सशक्त भूमिका निभा रही हैं. जनजातीय समाज की ताकत पर ध्यान देने की आवश्यकता है. कार्यक्रम को आइजीएनसीए, क्षेत्रीय केंद्र के निदेशक डॉ बच्चन कुमार व डॉ प्रदीप मुंडा ने भी संबोधित किया. मौके पर रांची विवि के रजिस्ट्रार डॉ अमर कुमार चौधरी, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के पूर्व एचओडी डॉ गिरिधारी राम गौंझू, संत जेवियर्स कॉलेज में हिंदी विभाग के एचओडी प्रो कमल कुमार बोस, रांची विवि व टाइबल स्टडी सेंटर के विद्यार्थी मौजूद थे.

प्रभात खबर Thu, 21 June 2018
epaper.prabhatkhabar.com/c/29696511

PRABHAT KHABAR RANCHI-21-06-2018

दैनिक भास्कर
Ranchi E-paper
DainikBhaskar.com
Date :- 21/06/2018

भारत में कई कठिनाइयों से गुजर रही हैं जनजातीय महिलाएं : डॉ. सुधीर सिंह

जनजातीय महिलाओं की स्थिति व चुनौतियां विषय पर सेमिनार

सिटी रिपोर्टर | रांची

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की क्षेत्रीय शाखा, रांची विश्वविद्यालय व जनजातीय अध्ययन केंद्र विकास भारती के सहयोग से बुधवार को जनजातीय महिलाओं की स्थिति व चुनौतियां विषय पर टैगोर हॉल, विकास भारती में सेमिनार किया गया। इसमें दिल्ली विवि के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. सुधीर कुमार सिंह ने कहा कि जनजातीय महिलाएं भारत में कई कठिनाइयों से गुजर रही हैं। हालांकि सरकार ने महिलाओं के विकास के लिए विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों की रचना की है, लेकिन सामाजिक स्तर में भी उन्हें अस्वीकृति मिली हुई है। उनके अलगाव के पीछे प्राथमिक कारण बेहद कम साक्षरता दर है। इनके पास काम, आय, परिवार की देखभाल करने और महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार है। तमाम अनुकूलताओं के बावजूद जनजातीय महिलाओं के लिए भारतीय समाज में उचित स्थिति हासिल करना अभी भी मुश्किल है। अध्यक्षता कर रहे पद्मश्री अशोक भगत ने कहा कि इस तरह के व्याख्यान का आयोजन होते रहने चाहिए। केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. बच्चन कुमार ने स्वागत वक्तव्य दिया। संचालन सुमेधा सेनगुप्ता ने किया। विकास भारती के डॉ. प्रदीप मुंडा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

DAINIK BHASKAR RANCHI-21-06-2018